तीर्थंकर और भगवान

Presentation Created by:

श्रीमति सारिका छाबड़ा

भगवान

वीतरागी

सर्वज्ञ

fppt.com

भ+ग+वान

भ	• = सुख/आनन्द (याने वीतरागता)
ग	• = ज्ञान
वान	• = वाले

fppt.com

वीतरागी

- वीत + रागी
- वीत अर्थात् बीत जाना, नष्ट हो जाना
- राग अर्थात् किसी को भला जानकर चाहना

सर्वज्ञ

- सर्व + ज्ञ
- सर्व अर्थात् संपूर्ण, सब कुछ
- ज्ञ अर्थात् जानना

fppt.com

भगवान कौन हैं?

अरहंत
और सिद्ध
परमेष्ठी
भगवान ही
हैं।

fppt.com

तीर्थंकर

जो धर्मतीर्थ (मुक्ति का मार्ग) का उपदेश देते हैं

समवशरण आदि विभूति से युक्त होते हैं

जिनको तीर्थंकर नामकर्म नाम का महापुण्य का उदय होता है

fppt.com

तीर्थंकर

तीर्थ = जिससे तिरा जाय / जो तिरे, दुखों से तिराये

जो स्वयं दु:खों से तिरे हैं

तीर्थंकर दु:खों से तिरा कर धर्म/सुख में धरते हैं

तीर्थंकर तो भगवान होते ही हैं

पर साथ ही जो तीर्थंकर न हों पर वीतरागी और पूर्णज्ञानी हों,

वे अरहंत और सिद्ध भी भगवान हैं।

भगवान जन्मते
नहीं, बनते हैं

गुण और शक्ति की
अपेक्षा तीर्थंकरों में
कोई अन्तर नहीं है

तीर्थंकर चौबीस होते हैं

24 तीर्थंकरों के नाम का छंद

ऋषभ1 अजित2 सम्भव3 अभिनन्दन4,
सुमति5 पद्म6 सुपार्श्व7 जिनराय।
चन्द्र8 पुहुप9 शीतल10 श्रेयान्स11 जिन,
वासुपूज्य12 पूजित सुरराय॥
विमल13 अनन्त14 धर्म15 जस उज्ज्वल,
शान्ति16 कुन्थु17 अर18 मल्लि19 मनाय।
मुनिसुव्रत20 नमि21 नेमि22 पार्श्व23 प्रभु,
वर्द्धमान24 पद पुष्प चढ़ाय॥

fppt.com

	नाम	चिह्न
१	ऋषभदेव (आदिनाथ)	वृषभ
२	अजितनाथ	हाथी
३	संभवनाथ	घोड़ा
४	अभिनन्दन	बंदर
५	सुमतिनाथ	चकवा
६	पद्मप्रभ	कमल
७	सुपार्श्वनाथ	साथिया
८	चन्द्रप्रभ	चंद्र
९	पुष्पदन्त (सुविधिनाथ)	मगर
१०	शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
११	श्रेयांसनाथ	गेंडा
१२	वासुपूज्य	भैंसा

	नाम	चिह्न
१३	विमलनाथ	शूकर
१४	अनंतनाथ	सेही
१५	धर्मनाथ	वज्र
१६	शान्तिनाथ	हिरन
१७	कुन्थुनाथ	बकरा
१८	अरनाथ	मीन
१९	मल्लिनाथ	कलसा
२०	मुनिसुव्रत	कछुआ
२१	नमिनाथ	लालकमल
२२	नेमिनाथ	शंख
२३	पार्श्वनाथ	सर्प
२४	महावीर (वर्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति)	सिंह

पँचबालयति

वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर भगवान ये 5 ही बाल ब्रह्मचारी थे इसीलिये इन्हें पँचबालयति भी कहते हैं

fppt.com

तीर्थंकर और भगवान में समानता

दोनों ही मोह-राग-द्वेष आदि सभी विकारी भावों से रहित हैं

दोनों ही अनन्त दर्शन-ज्ञानमय, अनन्त वीर्यसम्पन्न, सहज स्वाभाविक अतीन्द्रिय आनन्द से परिपूर्ण हैं

अर्थात् अनंत चतुष्टय से युक्त हैं

fppt.com

अन्तर

	तीर्थंकर	भगवान (तीर्थंकर बिना)
1	एक काल में ये २४ ही होते हैं	ये अनेक होते है
2	ये सभी भगवान तो होते ही हैं	सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते हैं
3	कुछ अरहंत परमेष्ठी ही तीर्थंकर होते है	ये अरहंत और सिद्ध परमेष्टी दोनों हो सकते हैं
4	ये शरीर सहित ही होते हैं	ये शरीर रहित और सहित दोनों होते हैं
5	इनके सिर्फ ४ घाति कर्मों का ही नाश होता है	ये ४ घाति कर्म और ८ कर्म से रहित होते हैं

अन्तर

	तीर्थंकर	भगवान (तीर्थंकर बिना)
6	इनका उपदेश होता है, दिव्यध्वनि खिरती है, समवशरण की रचना होती है	सभी का उपदेश नहीं होता है
7	इनके कल्याणक मनाये जाते हैं	इनके कल्याणक नहीं मनाये जाते हैं
8	इनका शासन चलता है	इनका शासन नहीं चलता है
9	इनके जिनबिम्बों पर चिन्ह होते हैं	अन्य भगवानों के जिनबिम्बों पर चिन्ह नहीं होते हैं

fppt.com

इनके जानने से क्या लाभ है ?

आदर्श कौन है इसका ज्ञान होता है

सच्चे सुख के मार्ग का ज्ञान होता है

शुद्धात्मा का स्वरूप प्राप्त होता है

इनके उपदेश से रत्नत्रय की प्राप्ति होती है

fppt.com

Presentation created by :
Smt. Sarika Vikas Chhabra

For comments / feedback / suggestions,
please contact:
sarikam.j@gmail.com
☎: 9406682889

For updates, check www.jainkosh.org

fppt.com